पंचम अध्याय

'दीक्षांत' और 'अग्निपंखी' उपन्यासों में कथोपकथन और भाषाशैली

'दीक्षांत' और 'अग्निपंखी' उपन्यासों में कथोपकथन और भाषाशैली

5 *कथोपकथन*

5 1 कथोपकथन के गुण - उपयुक्तता, स्वाभाविकता, संक्षिप्तता,उद्देश्यपूर्णता, संबद्धता, मनोवैज्ञानिकता, अनुकूलता, भावात्मकता

5 2 *भाषाशैली*

5 2 1 भाषा

5 2 1 1 शब्दप्रयोगों के रूप - तत्सम, तद्भव, अंग्रेजी, अरबी, फारसी, उर्दू, पुर्तगाली, द्विरूक्त, निरर्थक, अपशब्द।

5 2 1 2 भाषा के रूप - वर्णनात्मक, उपदेशात्मक, व्यंग्यात्मक, आवेशात्मक, गंभीर, ग्राम्य।

5 2 1 3 भाषासौंदर्य के साधन - विशेषण, कहावतें और मुहावरें।

5 2 2 शैली

5 2 2 1 वर्णनात्मक शैली,

5 2 2.2 विवरणात्मक या विश्लेषणात्मक शैली,

5 2 2 3 आंचलिक शैली,

5 2 2 4 मनोविश्लेषणात्मक शैली,

5 2 2 5 काव्यात्मक शैली।

निष्कर्ष

'दीक्षांत' और 'अग्निपंखी' उपन्यासों में कथोपकथन और भाषाशैली

'दीक्षांत' और 'अग्निपंखी' उपन्यासों में कथोपकथन -

उपन्यास के तत्त्वों में तीसरा महत्त्वपूर्ण तत्व है कथोपकथन। इसका स्वरूप इतना वैविध्यपूर्ण रहा है कि, आज तक इसे कोई भी विद्वान परिभाषा में बद्ध करने में सफल नहीं हो सका है। प्राय· पात्रों की बातचीत को कथोपकथन या संवाद कहा जाता है। प्रारंभिक उपन्यासों में कथोपकथन का वह रूप देखने नहीं मिलता था जैसा कि आज है। आज के उपन्यासों के संवादों में स्वाभाविकता को देखा जा सकता है जब कि आरभिक उपन्यासों में नाटकीयता दिखाई देती थी।

''कथोपकथनों के द्वारा कुछ विचारों को सजीवता देने में सरलता पडती है। नाटकों में जो वस्तु अभिनय द्वारा व्यक्त होती है, उपन्यासों में वह बहुत-कुछ कथोपकथनों द्वारा लायी जाती है।''[1]

संवाद चयन के पीछे प्रत्येक उपन्यासकार का अपना एक निश्चित उद्देश्य होना है। संवाद चयन के कई उद्देश्य माने जाते हैं -

1 कथानक का विकास करना।

2 पात्रों की व्याख्या करना।

3 लेखक के उद्देश्य को स्पष्ट करना।

कथोपकथनों के द्वारा ही उपन्यासकार दृश्यों में सजीवता लाता है और कथानक का विस्तार करता है। इन्हीं के माध्यम से अपनी कृति के पात्रों की व्याख्या करता है। उपन्यासकार द्वारा आयोजित उचित, स्पष्ट,. संजीव एवं सरस कथोपकथन पात्रों के चरित्र को उजागर करने में सहायक होते हैं। लेखक इन कथोपकथनों के माध्यम से अपने पात्रों के जरिए अपने उद्देश्य की पूर्ति तक पहुँचने का प्रयास करता है। इसलिए सिर्फ पात्रों की बातचीत प्रस्तुत करना ही उपन्यासकार का उद्देश्य नहीं होता, बल्कि पात्रों की चरित्रगत विशेषताओं को प्रस्तुत करना भी एक महत्वपूर्ण उद्देश्य रहता है।

5 1 कथोपकथन के गुण -

कथोपकथन में निम्नलिखित गुण होना आवश्यक है -

1 उपयुक्तता -

उपयुक्तता कथोपकथन का एक अत्यंत महत्त्वपूर्ण गुण है। कथोपकथन घटनाओं, अवसर तथा वातावरण की दृष्टि से अत्यंत उपयुक्त होने चाहिए।

2. स्वाभाविकता -

कथोपकथन अत्यंत सहन एवं स्वाभाविक होने चाहिए जिससे उपन्यास में सहजता आ जाती है।

3 संक्षिप्तता -

लंबे-चौडे कथोपकथन पाठकों को बोझिल प्रतीत होते हैं, उनसे पाठक ऊब जाते हैं। इसलिए उपन्यास में कथोपकथन संक्षिप्त एवं चुटीले होने चाहिए। जिससे पाठक आरंभ से अंत तक उपन्यास को रूचि से पढ सके। लंबे कथन नीरस लगते हैं। इसलिए संक्षिप्त कथोपकथन प्रभावोत्पादक होते हैं।

4. उद्देश्यपूर्णता -

कथोपकथनों के चयन के समय लेखक को अत्यंत सावधान रहना चाहिए क्योंकि अनावश्यक या उद्देश्यरहित कथोपकथन व्यर्थ होते हैं।

5 संबद्धता -

जिन कथोपकथनों का चयन उपन्यासकार ने किया है, वे कथानक से संबद्ध होने चाहिए। ''कथोपकथन के माध्यम से उपन्यासकार जिस बात को कह रहा हो या कहना चाहता हो उसमें कथानक तथा पात्रों से किसी-न-किसी प्रकार का प्रत्यक्ष पारस्पारिक संबंध आवश्यक होना चाहिए।''[2]

6 मनोवैज्ञानिकता -

यह प्रवृत्ति आधुनिक काल के उपन्यासों में अधिकतर पायी जाती है। आधुनिक उपन्यासों में

पात्रों के मनोविश्लेषण के लिए मनोवैज्ञानिक कथोपकथनों का चयन किया जाता है। इससे उपन्यास की कलात्मकता में वृद्धि हो जाती है।

7 अनुकूलता -

कथोपकथन पात्रों के स्वभाव के अनुकूल होने चाहिए। "एक ओर कथोपकथन का पात्रों के स्वभाव से वैषम्य नहीं होना चाहिए, तो दूसरी ओर उसे पात्रों के सामाजिक, बौद्धिक और सांस्कृतिक स्वरूप के अनुकूल भी होना चाहिए।"[3]

8 भावात्मकता -

भावात्मक कथोपकथन उपन्यास को और भी प्रभावशाली बनाने में सहायता करते हैं। इनसे उपन्यास में सरसता, काव्यात्मकता आ जाती है।

आलोच्य उपन्यासों - 'दीक्षात' और 'अग्निपंखी' की लेखिका सूर्यबाला ने अपने उपन्यास में जिन संवादों का चयन किया है, उसके पीछे भी उनके कई उद्देश्य रहे हैं। उन्होंने कई कथोपकथनों के जरिए घटनाओं और दृश्यों में सजीवता लाई है। इन उपन्यासों के कथोपकथनों द्वारा लेखिका ने उपन्यासों में स्वाभाविकता, रोचकता उत्पन्न की है। जिससे कथानक गतिशील बन गए हैं। उपर्युक्त गुणों के आधार पर सूर्यबाला के उपन्यास 'दीक्षांत' और 'अग्निपंखी' के संवादों को हम निम्नलिखित दृष्टि से परख सकते हैं -

1. उपयुक्तता -

सूर्यबाला ने अपने 'दीक्षांत' उपन्यास में जिन संवादों का चयन किया है वे सभी उपन्यास में घटित घटनाओं, अवसरों और वातावरण के उपयुक्त हैं। कॉलेज में नई व्याख्याती मोना चौधरी मिटिंग के कारण लेक्चर्स न होने की चिंता में है तभी उसे कहा जाता है -

"अरे, आप अभी नई है न मोना जी। इतनी खींचतान की गुंजाइश तो हम अपने लोगों के बीच रखते ही है। सीधी-सी बात तो यह है कि यह आजकल क्लास-रूमों में चिल्ला-चिल्लाकर जी-जान से

पढाना-समझाना कुछ खास मायने रखता ही नहीं हम टीचर्स का, खासकर जब कि छात्र-छात्राएँ हमेशा निहायत तफरीही मूड में रहते हो, मसलन चुइंगम चूस रहे हैं या फिर इश्कहकीकी फरमा रहे हैं।[4]

एक ओर अध्यापकों को विद्यार्थियों के नुकसान की चिंता है तो दूसरी ओर विद्यार्थियों की बेफिक्र वृत्ति है। वर्तमान जीवन की इस विसंगति को व्यक्त करने की दृष्टि से यह संवाद उपयुक्त हैं।

'अग्निपंखी' उपन्यास में संवाद घटित घटनाओं, अवसरों और वातावरण के उपयुक्त हैं। जयशंकर नौकरी के लिए शहर जाता है परंतु उसे नौकरी नहीं मिलती है तब वह गाँव वापस लौटता है। लोग उसकी छींटाकशी करते हैं, जैसे- ''हुँह, मनलायक नौकरी नहीं मिल रही पता नहीं कितना सच, कितना झूठ इम्तहान भी पास किया कि यों ही बेवा मॉ और चाचा-ताऊ को उल्लू बना रहा है वरना ऐसा भला हो सकता था कि नौकरी के लिए इम्तहान पास किया जाए और नौकरी ही न मिले।''[5]

किसी घटना के प्रति समाज के अविश्वसनीय दृष्टिकोण को अभिव्यक्त करनेवाले यह कथोपकथन वातावरण की दृष्टि से भी उपयुक्त हैं।

2. स्वाभाविकता -

सहज, स्वाभाविक कथोपकथनों के जरिए ही उपन्यासकार सूर्यबाला ने हमें आरभ से अंत तक उपन्यास का पठन करने के लिए मजबूर कर दिया है। सभी कथोपकथन पात्रों की आवश्यकता के अनुसार प्रयुक्त किए गए हैं, जैसे- ''यह सब तुम लोगों की खामखयाली है क्या टीचर को तुमसे दुश्मनी है जो ठीक-ठीक, सही लिखने पर भी तुम्हें कम नबर देंगे ? जिसे ट्यूशन देते हैं उसे अवश्य नंबर देंगे, पर तुम्हारे काटेंगे क्यों ?''

''आप नहीं मानते न कल स्कूल में जाकर कॉपी देख लीजिएगा। मेरे भी उतने ही सवाल ठीक, देवश के भी। उसे पैंतालीस मिले हैं, मुझे बयालीस।''

''तुमने पूछा नहीं ?''

''पूछा था, दुनिया भर की दूसरी शिकायते बनाकर डॉटने लगे . . तुम लोगों को जितने नंबर दो उतने ही सिर चढ आते हो, अनुशासनहीनता हद से ज्यादा बढ गयी है इस स्कूल में. ., अब लडके टीचरों में ही

खोट निकालने लगे हैं मैं जाकर प्रिंसिपल से शिकायत करता हूँ.. कम से कम दो नंबर तुम्हारी अनुशासनहीनता के कटने चाहिए .. और भी जाने क्या . क्या।''[6]

मन की उद्विग्नता को व्यक्त करने की दृष्टि से यह नाटकीय संवाद स्वाभाविक लगते हैं।

'अग्निपंखी' उपन्यास में भी स्वाभाविक संवाद आ गए हैं, जैसे -

''अब मैं जरा ढरकूंगी।''

''तो ढरको न। कौन मने करता है।''

''अरे, तो यहॉ थोडी ढरकूंगी, अंदर ओसारे, या आंगन में।''[7]

3. संक्षिप्तता -

संक्षिप्त कथोपकथन पाठकों की रोचकता को बनाए रखते हैं। सूर्यबाला ने कई जगहों पर पात्रों के चरित्र-चित्रण के लिए संक्षिप्त कथोपकथनों का चयन किया है। जिससे पाठक रूचि के साथ उपन्यास को आरंभ से अंत तक पढ लेता है। जैसे नि शर्मा और छात्रों के निम्नलिखित संवाद -

''वे डस्टर पटककर चीखे, ''स्टैडअप''।''

'सर, कौन ?'

'मैं ?'

'नहीं, मैं बे।'

'क्या मैं, सर।'

'तुम सबके सब, पूरी बेंच .।'

'लेकिन सर, मेरी क्या गलती ?'

'क्या कह रहे थे तुम ?'

'सर मैं नही, ये बरूआ कह रहा था ।

'क्या ?'[8]

SHIVAJI UNIVERSITY KOLHAPUR

'अग्निपंखी' में भी संक्षिप्त कथोपकथन का चयन हुआ है, जैसे -

''क्या ठीक हो गई ?''

''नहीं ''

''तब कैसे ले आए ?''[9]

संक्षिप्त कथोपकथन से पाठकों की रोचकता बनाई रखने में सूर्यबाला ने ऐसे कई संवादों का प्रयोग किया है।

4. उद्देश्यपूर्णता -

संवाद चयन करते समय उपन्यासकार सूर्यबाला ने 'दीक्षांत' और 'अग्निपंखी' उपन्यास में कई उद्देश्यों को सामने रखा है।

'दीक्षांत' उपन्यास में अध्यापक जीवन की दयनीयता को सामने रखा है। आदर्श उसूलवाले मि शर्मा को आज परमनेंट नौकरी नहीं मिल रही है। इसलिए उसे ट्यूशन लेने पडते हैं। वहॉ भी उसकी उपेक्षा की जाती है - ''जरा इंतजार कर ले मास्टरजी, बच्चे हैं न, उनके मामा जी आए हुए हैं, नया-नया ड्राइव करना सीखा है। सो नई गाडी लेकर यही किडी कार्नर गया होगा आइस्क्रीम वगैरह खाने अभी आ जायेगा।''[10]

इस उपन्यास में अध्यापक वर्ग की आपसी जलन दिखाई है। मि. शर्मा क्वालिफाईड अध्यापक है। गुप्ताजी एम् ए. थर्ड क्लास है। शर्मा का क्वालिफिकेशन गुप्ता पर बोझ बनता है इसलिए वे शर्माजी का द्वेष करते हैं। इस उपन्यास में विद्यार्थियों से प्राप्त तकलिफें, उपेक्षा, शरारते भी सामने रखी हैं। उसी तरह गलत शिक्षाप्रणाली को सामने रखा गया है -

''तुम्हें मालूम है ? बरूआ परिवार से विद्यालय को हजारों के डोनेशन और जाने कितनी ऊपरी सहायता मिलती है। फांस तो संस्थाओं के लिए हमारे-तुम्हारे जैसे निकम्मे जीव होते हैं, जिससे उनका कोई स्वार्थ नहीं सधता, आजकल हर संस्था सामाजिक, राजनीतिक, धार्मिक पोल्ट्रीफार्म के नाम पर सोने के अंडे देनेवाली मूर्गियों का एक खासा कलेक्शन करना चाहती है, बस।''[11]

'अग्निपंखी' उपन्यास में संयुक्त परिवार का विघटन सामने रखा है। संयुक्त परिवार का बॅटवारा, भाईजनों का संघर्ष, आवास की समस्या, सास-बहू का सघर्ष, बुढापे की समस्या सामने रखी है, जैसे-

जिसने जनम से कभी खेती-बारी जानी ही नहीं सिवा पढाइ के, वह अब सहर में भी रूपया हिलोरे और गाँव की जमीन पर भी हकदारी दिखाए, तो बोलो, क्या यह ठिक होगा ईमान की बात होगी?''[12]

5 संबद्धता -

सभी कथोपकथन उपन्यास के उद्देश्य को सफल बनाने के लिए ही लिखे जाते हैं ऐसी बात नहीं। कभी-कभी कथोपकथनों से उपन्यास की घटनाओं के संकेतार्थ भी प्रस्तुत किए जाते हैं, साथ ही पात्रों के चरित्र-चित्रण में भी कथोपकथन सहायक होते हैं।

'दीक्षांत' उपन्यास में लेखिका ने संवादों की संबद्धता स्पष्ट की है। विद्याभूषण शर्मा अपने स्कूल मे साहब के प्रश्नों के सही उत्तर देते हैं तब संबद्धता स्पष्ट होती है, जैसे -

''बहुत खूब। मान गए, मास्टर साहब। तालीम सही दे रहे हैं बच्चों को आप। मैं अपनी बात वापस लेता हूँ। जाओ बेटे, शाबास। क्या नाम है तुम्हारा ?''

भूषण ने नाम बताया।

डिप्टी साहब बार-बार अनिभूत स्वर में दुहराते रहें - 'शाबास। खूब पढो-बढो और यशस्वी बनो।''[13]

'अग्निपंखी' उपन्यास में भी संबद्धता दिखाई देती है, जैसे - ''जीजी, भाई जी से कह दो, डांट-मार चाहे जितना ले, पर 'संकरवा' कहकर 'रेरी' मार के न बुलया करे।''[14]

6. मनोवैज्ञानिकता -

मनुष्य के मन का विश्लेषण करना तो कठिन बात है परंतु पात्रों की बातचीत के जरिए हम उनके मन की गहराइयॉ नापने की कोशिश जरूर कर सकते हैं। सूर्यबाला ने अपने उपन्यास में कई जगहों पर मनोवैज्ञानिक कथोपकथनों का प्रयोग कर पात्रों के अंतर्मन को पाठकों के सम्मुख खोलकर रख दिया है।

'दीक्षांत' उपन्यास में मि शर्मा के संवाद -

''क्यों नहीं दी जा सकेगी, दी जानी चाहिए ही मैं सबसे ज्यादा क्वालिफाइड हूँ, पीएच् डी मुझे छोडकर किसी ने नहीं की है। मुझे छोडकर यह पद और किसी को देना सरासर अन्याय होगा। यह मेरी ही

नहीं, विद्यालय की प्रतिष्ठा का भी सवाल होगा कि संस्था में एक क्वालिफाइड व्यक्ति के रहते उसे उसके अधिकार से वंचित रखा जाए।''[15]

''हरगिज नही, संभालो अपने आपको . क्योंकि... क्योंकि अब तुम अकेले नहीं ... तुम्हारी जिदगी के साथ कुछ और असहाय, अबोध प्राणियों का भाग्यचक्र जुडा हुआ है। तुम कुछ कर बैठोगे तो उसकी सजा वे बेकसूर ताउम्र भोगते रहेंगे ?''[16]

उपर्युक्त संवादों से हमें पता चलता है कि मि. शर्मा को गहरी ठेस पहुँची है। और उसकी चेतना और संतुलन खोता जा रहा है।

'अग्निपंखी' उपन्यास में भी मॉ के संवाद इस तरह के हैं -

''हाँ तिरलोकी ठाकुर .. ।''

''राम रे कैसे घटाटोप बादल छाय रहे हैं ।.. .धाराधार... सिवान समेत गॉव ले डूबेंगे. . किरपा करो, धरती मइया। घट-घट वासिनी, पाठ करो रे, सब पाठ करो . नहीं तो ये बादर परल्य ला देंगे। सऽऽब डूब रहा है। सऽऽब डूऽऽब रऽऽहा है ।''[17]

उपर्युक्त संवादों से ज्ञात होता है कि मॉ पर गहरा आघात हुआ है। इन संवादों से मॉ की विक्षिप्त मानसिकता का पता चलता है।

7 पात्रानुकूलता -

सूर्यबाला ने पात्रों के स्वभाव, परिस्थिति के अनुकूल संवाद 'दीक्षांत' और 'अग्निपंखी' उपन्यास में लिखे हैं। प्रोफेसर शर्मा एक क्वालिफाइड और सरल स्वभाव का अध्यापक है। उसकी बातों में विद्वत व्यक्ति की तर्कपूर्णता के साथ-साथ सरलता भी द्रष्टव्य है -

''क्यों नहीं दी जा सकेगी, दी जानी चाहिए ही मैं सबसे ज्यादा क्वालिफाइड हूँ, पीएच्. डी. मुझे छोडकर किसी ने नहीं की है, मुझे छोडकर यह पद और किसी को देना सरासर अन्याय होगा। यह मेरी ही नहीं विद्यालय की प्रतिष्ठा का भी सवाल होगा कि संस्था में एक क्वालिफाइड व्यक्ति के रहते उसे उसके अधिकार से वंचित रखा जाए -

बरूआ एक अमीर बाप का उद्दंड लडका है। संवादों से उसकी उद्दंडता स्पष्ट होती है -

''उसकी बात छोडिए, सर, पर यह तो होम इग्जाम है। फिर आप जैसे शिक्षकों का फायदा ही क्या ?''

''इतना गरम होने की क्या बात है सर,''

''मैं तो इसलिए आया था आपके पास कि कॉलेज में आपको भी रहना है, मुझे भी। शायद यह समझकर आप थोडी रियायत बरत दे, आप नहीं चाहते तो न सही ।''[19]

'अग्निपंखी' उपन्यास में भी संवादों की पात्रानुकूलता दिखाई देती है। जयशंकर चाची गांव में रहती है। उसी के अनुसार उसके संवाद है, उसमें ग्रामीण शब्द हैं, उसके संवादों से गॉव के जीवन की झॉकी भी प्रस्तुत होती है, जैसे -

''कौन जाने पधावे ही। हमारा क्या, गॉव के हुए। मोटा-झोटा खाते हैं, मोटा ही पहनते हैं। कच्चे, पक्के जैसा भी होता, रह लेते हैं।''[20]

जयशंकर की मॉ की अपढ भाषा से उसकी योग्यता स्पष्ट होती है -

''न न रहने दो। अभी तो मैं कुल्ला-फरागत से निबटूंगी, फिर अपना चना-चबेना ले लूगी.. तुम लोग पीओ।''[21]

इस प्रकार अन्य भी कई कथोपकथन पात्रों के अनुकूल बन पडे हैं।

8. भावात्मकता -

'दीक्षांत' और अग्निपंखी' उपन्यास में कई जगहों पर लेखिका ने कथोपकथनों में भावात्मकता पैदा की है। जिनसे उपन्यास में सरसता आ गई है, जैसे -

'दीक्षांत' में मि. शर्मा ममता से विनय से कहता है-

''जाने दो, लडाई-झगडे से क्या फायदा ..फाइनल में तो तुम्हारे टीचर पक्षपात नहीं कर पायेंगे न, जीत न्याय की ही होगी।''[22]

कुंती जब अपने बचों को लेकर वापस गॉव जा रही थी। तब विजयेंद्र के पिता उनकी सहायता करना चाहते हैं। उस समय भावुक होते हुए वे कहते हैं -

''पता नहीं क्यों रात भर सो न सका। सुबह भी उठने के बाद मन भटकता रहा अनायास एक निश्चय पर पहुँचा और उसके बाद सीधे रिक्शा लेकर यहॉ भागा चला आ रहा हूँ। आपसे सिर्फ यह कहने कि आपके दोनों बच्चों की शिक्षा-दीक्षा का भार आप मुझे सौंप सकेंगी ?''[23]

इस प्रकार सूर्यबाला ने भावात्मक संवाद हमारे सामने रखे हैं। जिससे ये चरित्र सामान्य चरित्र से ऊपर उठे हैं।

सारांश यह है कि सूर्यबाला ने 'दीक्षांत' और 'अग्निपंखी' उपन्यास में कथोपकथन में सफलता पाई है। स्वाभाविक, उपयुक्त, पात्रानुकूल, मनोवैज्ञानिक, संक्षिप्त कथोपकथन के जरिए कथानक को गतिशील बनाया है और अपने उद्देश्य को स्पष्ट किया है। कई घटनाओं में लेखिका ने पात्रों का आंतरिक विश्लेषण किया है। कथोपकथन सजीव, रोचक एवं पात्रानुकूल है। सूर्यबाला ने उपन्यासों को उपर्युक्त कथोपकथनों से प्रभावशाली बनाया है। संवादों की दृष्टि से दोनों उपन्यास सफल हैं।

कथोपकथन ही वह तत्त्व है जो पाठकों को बॉधे रखता है। जिसके द्वारा पाठक मूल पात्र के स्थान पर अपने को देख सकता है, तादात्म्य स्थापित कर सकता है। सूर्यबाला इस दृष्टि से एक सफल उपन्यासकार सिद्ध होती है।

5.2 'दीक्षांत' और 'अग्निपंखी' उपन्यास की भाषाशैली

5 2.1 भाषा -

भाषाशैली उपन्यास का महत्त्वपूर्ण तत्त्व है। उपन्यास साहित्य सृजन के प्राथमिक काल में भाषा का इतना महत्त्व नहीं था। भाषा के बजाय विषय-वस्तु को प्रधानता दी जाती थी। आजकल उपन्यास में भाषा का अपना अलग महत्त्व है। भाषा के जरिए उपन्यासकार पाठकों पर विशेष प्रभाव डाल सकते हैं। लेखक, सामान्य, सुलभ भाषाशैली द्वारा चरित्र की विशेषताओं पर प्रकाश डालता है। लेखक विशेष प्रभाव के लिए ही सामान्यत. साहित्यिक भाषा को त्यागकर बोलचाल की भाषा एवं अंचल-विशेष की भाषा को अपनाता है।

डॉ. सुरेश सिन्हा का मत दृष्टव्य है - ''प्रत्येक जीवन परिवेश को अभिव्यक्त करने के लिए भाषा का अपना रूप होता है। परिवेश में परिवर्तन के साथ भाषा का स्वरूप नया हो जाता है। परिवर्तन के इन सूत्रों को न पहचान सकना अविवेकपूर्ण दूराग्रह है। जीवन-परिवेश बदल जाने पर भी जब हम उसी भाषा का प्रयोग करते रहते हैं तो विडंबनाएँ उत्पन्न होती हैं और मामूली-सा कथ्य भी अविश्वसनीय या चौंकानेवाला बन जाता है और वह हमसे कोई रिश्ता जोड नहीं पाता। कथ्य जितना ही प्रामाणिक होगा भाषा उतनी ही सहज होगी।''[24]

'दीक्षांत' और 'अग्निपंखी' उपन्यास में सूर्यबाला ने सरल, सरस और प्रवाहशील भाषा को अपनाया है, परंतु ''किसी भाषा के वर्तमान सैद्धांतिक और व्यावहारिक रूपों का शास्त्रीय नियंत्रण उसके व्याकरण द्वारा ही होता है।''[25] प्रतापनारायण टंडन के इस वक्तव्य से अगर हम 'दीक्षांत' और अग्निपंखी' की भाषाशैली की जाँच करना चाहे तो हमें सर्व प्रथम इन उपन्यासों में प्रयुक्त शब्दों के विविध रूपों को देखना पडेगा। फिर 'दीक्षांत' और 'अग्निपंखी' उपन्यासों में प्रयुक्त भाषा-रूपों तथा भाषाशैली की जाँच करनी पडेगी।

5.2.1.1 शब्दप्रयोगों के रूप -

'शब्द' भाषा की एक महत्त्वपूर्ण इकाई है। उपन्यासकार अपने उपन्यास की भाषा को सुंदर, सहज बनाने के लिए शब्दों के कई रूपों का प्रयोग करता है, जैसे-

तत्सम शब्द -

किसी भाषा का विशेषत संस्कृत के वह शब्द जिनका प्रयोग या व्यवहार दूसरी या देशी भाषाओं में उसके मूल रूप में ज्यों का त्यों किया जाता है उसे तत्सम शब्द कहते हैं। 'दीक्षात' और 'अग्निपंखी' उपन्यास में निम्नलिखित तत्सम् शब्द आए हैं -

'दीक्षांत' -> कक्षा(9), अक्षर(10), पक्ष(32), मित्र(51), परिषद(87), गंभीर(88) आदि।

'अग्निपंखी' -> हल(10), पक्ष(21), उत्तर(28), अक्षर(30), वक्त(50), मृत्यु(62), जीवन(62) आदि।

तद्भव शब्द -

भाषा में प्रयुक्त होनेवाला संस्कृत का वह शब्द जिसका रूप विकृत और परिवर्तित हो गया हो वह तद्भव शब्द है। 'दीक्षांत' और 'अग्निपंखी' उपन्यास में निम्नलिखित तद्भव शब्द मिलते हैं -

'दीक्षात' -> दुबला(38), बॉह(38), भूख(54), घर(71) आदि।

'अग्निपंखी' -> घर(9), सहेर(9), दरद(9), रोसनी(9), अइसी(9), भाई(10), भइया(10), दूध(11), बहू(13), भूख(16), चॉद(18), खेत(18), फारम(22), काहे(28), बेसरम(30), जेहल(30) आदि।

अंग्रेजी शब्द -

'दीक्षांत' और 'अग्निपंखी' उपन्यास में निम्नलिखित अंग्रेजी शब्द आए हैं -

'दीक्षांत' -> सॉरी(3), रेलिंग(4), ब्लू जैकाल(4), गेटआऊट(7), परमानेंट(8), ड्यूटी(24), फार्मुला(24), स्टीयरींग(29), इग्जीक्यूटीव(29), रजिस्ट्री(31), क्रांग्रेच्युलेशन(33), ड्रामा(36), चीफ गेस्ट(36), असिस्टेंड(44), क्वालिफिकेशन(43), मैनेजमेंट(44), कॉनट्रेक्टर(52), इनफरमेशन(53), कॉस्मेटिक्स(55), इस्टीट्यूशन(83), लिमिटेशंस(83), रेजीग्नेशन(83), अप्वाइंटमेंट(89) आदि।

'अग्निपखी' -> पतलून(9), रेजबसीट(9), बुसर्ट(9), ओवरटाइम(28), अस्पताल(46), डॉक्टर(46), मास्टर(40), फैक्टरी(47), रजिस्ट्री(49), सुपरवाइजर(50), मिडवाइफ(51), कैंटीन(51), राईसप्लेट(51), एक्स-रे(56), मिल्क(57), स्टेशन(54), आदि ।

अरबी शब्द -

'दीक्षांत' -> किताब(6), लेकिन(6), दुनिया(8), इमारत(12), अमीर(15), आखिर(20), कायदा(30), आदमी(34), कुर्सी(51), दुकान(54), फायदा(56), औरत(88), इस्तीफा(9), आदि।

'अग्निपखी' -> औरत(11), लेकिन(11), मालूम(12), अफसर(13), आखिर(14), इंतजार(14), आदमी(17), कायदा(15), दुनिया(18), लायक(20), किताब(21), एहसान(21), मौका(22), इलाज(52) आदि अरबी शब्दों का प्रयोग हुआ है।

फारसी शब्द -

'दीक्षांत' -> खामोश(7), जिंदगी(9), लापरवाही(54), बदतमीज(68), अख्तियार(75) आदि।

'अग्निपंखी' -> जिंदगी(10), होश(17), पुरजे(61), आदि फारसी शब्दों का प्रयोंग हुआ है।

उर्दू शब्द -

'दीक्षांत' उपन्यास मे कफन(120), आदमी(34), ये उर्दू शब्द आए हैं।

पुर्तगाली शब्द -

'अग्निपंखी' उपन्यास में तौलिया(13), अचार(13), कनस्तर(27) आदि पुर्तगाली शब्द आए हैं।

द्विरूक्त शब्द -

'दीक्षांत' और 'अग्निपंखी' उपन्यास में निम्नलिखित दिरूक्त शब्द आए हैं -

'दीक्षात' -> निकालते-निकालते(19), लौटते-लौटते(29), कहते-कहते(36), रोकते-रोकते(36), अंदर-अंदर(30), खुश-खुश(37), खडे-खडे(50), बीच-बीच(53), देखते-देखते(59), जल्दी-जल्दी(56), कतरे-कतरे(66), धीरे-धीरे(72), सिर्फ-सिर्फ(75), चलते-चलते(77), बारी-बारी(79), साफ-साफ(81), फला-फला(90), बढते-बढ़ते(97), क्षण-क्षण(98), चूर-चूर(121), चिथडे-चिथडे(121) आदि।

'अग्निपंखी' -> साफ-साफ(10), सुडप-सुडप(14), आते-आते(15), रहते-रहते(15), धीरे-धीरे(20), ढलते-ढलते(22), पीते-पीते(24), करीब-करीब(28), अभी-अभी(29), उतरते-उतरते(33), अलग-अलग(33), घूमते-घूमते(34) आदि दिवरूक्त शब्दों का प्रयोग हुआ है।

निरर्थक शब्द -

'दीक्षांत' और 'अग्निपंखी' उपन्यास में निम्नलिखित निरर्थक शब्द आए हैं, जो भाषा में स्वाभाविक प्रवाह लाने की कोशिश में प्रयुक्त हैं।

'दीक्षात' -> उबड-खाबड(4), तितर-बितर(4), लंदा-फंदा(4), मिला-जुला(4), आते-जाते(6),

शिकायत-विकायत(8), जोड-तोड(32), अगल-बगल(42), आगे-पीछे(75), यहॉ-वहॉं(59), टूटते-फूटते(78) आदि।

'अग्निपखी' -> नजर-गुजर(10), सजाओ-बजाओ(11), खटवार-पटवार(13), अगल-बगल(13), रात-बिरात(18), आते-जाते(18), अंदर-बाहर(17), अडबी-तडबी(19), इधर-उधर(23), लस्त-पस्त(23), जब-तब(27), लेना-देना(30), यहॉ-वहॉ(41), गिरा-विरा(55), खाते-पीते(51) आदि निरर्थक शब्द आए हैं।

अपशब्द -

'दीक्षांत' उपन्यास में फुलिश(22), स्साला(54), बुचर्स(54), रब्बिश(68), बेवकूफ(86), आदि अपशब्द आए हैं।

तात्पर्य यह कि 'दीक्षांत' और 'अग्निपंखी' उपन्यास में तत्सम्, तद्भव, अंग्रेजी, फारशी, उर्दू, पुर्तगाली, दिरूक्त, निरर्थक, अपशब्द आदि शब्दों के रूपों से उपन्यास की भाषा सहज, सुंदर और प्रभावशाली बनी है। हिंदीतर शब्दों का प्रयोग भी स्वाभाविक लगता है, कारण यह शब्द कहीं भी कथाप्रवाह में बाधक प्रतीत नहीं होते हैं।

5.2 1.2 भाषा के रूप -

भाषा वह इकाई है, जिसका सबंध मानव जाति के सब से छोटे अवयव-व्यक्ति से लेकर विश्वमानव की समष्टि तक है। कालभेद, स्थानभेद, देशभेद, स्तरभेद आदि के आधार पर भाषाओं की अनेकरूपता दृष्टिगोचर होती है।

'दीक्षांत' और 'अग्निपंखी' उपन्यास में भाषा के कई रूप देखने को मिलते हैं। वह रूप निम्नलिखित हैं -

वर्णनात्मक भाषा -

'दीक्षांत' उपन्यास में वर्णनात्मक भाषा का प्रयोग हुआ है। भाषा के इस रूप से लेखिका आधुनिक नारी का परिचय देती है।

''अंदर से पीली आरगेंजा, मोती जडे टॉप्स और खुशबू बिखेरती, रूमाल ऊंगलियों में फॅसाए मिसेस सब्बरवाल उतरी, मिसेस सब्बरवाल स्वीवलेस चुस्त ब्लाऊज के बाए कधे पर पीली आरगेंजा का तहाया पल्लू और दाहिने पर स्वेटे बैग झुलाती गजब के आत्मविश्वास के साथ स्टाफ रूम की ओर बढ आयी।''[26]

वर्णनात्मक भाषा से लेखिका ने पॉलिटिक्स का आदमी और कॉलेज के अध्यापकों का परिचय दिया है -

''चद्रभान सिंह का पॉच फुट पांच इंच का कद उन्हें खासा छः फुटा लगता है और पूरी चोहद्दी बला की रूआबदार- कैसे धीरे-धीरे उन्होंने यह रूतबा अख्तियार कर लिया।''[27]

''देखने में बेहद दुबला-पतला, पिद्दी-सा लेकिन पोजीशन होल्डर और संत साहित्य का पीएच् डी क्वालिफिकेशन ऐसा कि इंटरव्यू के साथ किसी भी आधार पर उसे 'ना' किया ही नहीं जा सका।''[28]

'अग्निपंखी' उपन्यास में वर्णनात्मक भाषा का प्रयोग हुआ है। छोटी बच्ची को सजाए जाने का इसमें वर्णन आया है -

''बित्तेभर की चंदा। दो अंगुल-भर बाल नहीं, पर गज-भरे लंबे लाल गुलाबी फीते का फूल बना रहता है।''[29]

भाषा के इस रूप द्वारा लेखिका ने चलती रेलगाडी से दिखाई देनेवाले सृष्टि के दृश्य का परिचय दिया है -

''इसी जयशंकर का मुंडन कराने गयी थी न रेल-गाडी से मिर्जापुर, विंध्याचल स्टेशन पर उतरी थी। सब याद है, रास्ते भर इंजन ऐसा धुआं धधकता, कोयले का चूरा फेंकता गया था कि एक बार आंख में पड जाए, तो घंटों रगडो। तब उन्हें क्या मालूम था, खिडकी से सिर निकालकर भागते पेड-पालव को देखा ही था कि जलौठे भभके के साथ आंख किरकिराने लगी।''[30]

इसमें बहू के रूप का परिचय भी दिया है -

''श्यामकिशोर की बहू मेरी बहू जैसी सलोनी नहीं। उंह, बिलकुल चेपरी जैसा तो मुह है।''[31]

लेखिका वर्णनात्मक भाषा से आधुनिक नारी, कॉलेज का अध्यापक, पॉलिटिक्स आदमी, छोटी बच्ची, रेलगाडी आदि का परिचय देने में सफल हो चुकी है कारण यह वर्णनात्मक विषय है और लेखिका ने उन्हें

वर्णनात्मक भाषा द्वारा व्यंजित किया है।

उपदेशात्मक भाषा -

'दीक्षांत' और 'अग्निपंखी' उपन्यास में उपदेशात्मक भाषा का प्रयोग हुआ है।

'दीक्षांत' में मि शर्मा अपने बेटे को समझाते हुए उसे लडाई-झगड़े न करने का उपदेश देते हैं-

''मुझे जरा भी समय मिला तो जरूर जाऊँगा, पर तुमने अच्छा ही किया, जो नहीं गये, एक पक्ष अपना फर्ज छोड दे तो क्या दूसरा भी।'' ''जाने दो, लडाई-झगडे से क्या फायदा-फाईनल में तो तुम्हारे टीचर पक्षपात नहीं कर पायेंगे न, जीत न्याय की होगी।''[32]

मि. शर्मा की सहायता मि डिसूजा करना चाहते हैं। तब उन्हें उपदेश देते हुए कहते हैं -

''और मेरी एक बात याद रखो, यह दुनिया तुम्हारे सूर-तुलसी और संत काव्यवाली दुनिया नहीं है, यहॉ चीज अपने-आप आकर तुम्हारे पैरों पर नहीं गिरेगी, उसके लिए ऐडी-चोटी का पसीना एक करना होता है, मॉगना पडता है, आगे बढकर लेना पडता है और वक्त पडने पर अपने लिए नहीं तो बीवी-बच्चो के लिए छिनना और झपटना भी पडता है - अब दिल-दिमाग में सोचो मत, जल्दी-से-जल्दी जाकर राजदान से बात करों।''[33]

बंसल अपने बेटे की बीमारी से परेशान है तब उसे यादव कहता है - ''आजकल किस रोग की आड में कौन-सा रोग सेंध मार दे ठिकाना नहीं, लापरवाही ठीक नहीं, शुरू में ही डाक्टर के पास ले जाना था।''[34]

'अग्निपंखी' उपन्यास में जयशंकर की मॉ उसे एक-दूसरे के साथ रिश्ता रखने के बारे में कहती है - ''अरे लेना-देना हो, तभी क्या अपने गॉव घर के आदमी से परस्पर रखे ? यह तो आपस का प्रेम है, ब्योहार है- वैसे भी यहाँ परदेस में बसे हो- अपने नाते-रिश्ते में ब्योहार बनाकर नहीं रहोगे, तो ।''[85]

जयशकर की मॉ अपनी बहू को संसार की बाते बताना चाहती है -

''बहू को सीख-सिखवान देंगी। गिरस्ती सिखायेंगी।''[36]

'दीक्षांत' और 'अग्निपंखी' उपन्यास में लेखिका को उपदेशात्मक भाषा में सफलता मिली है।

व्यंग्यात्मक भाषा -

'दीक्षांत' उपन्यास में व्यंग्यात्मक भाषा का प्रयोग हुआ है। मिस चौधरी अपने लेक्चर्स की

चिंता व्यक्त करती है तब उस पर व्यंग्य किया जाता है -

''अरे, आपका भी जबाब नहीं कमलेश-जी कहॉ तो मिस चौधरी, अभी नई उमंग, नया जोश लिए हमारे प्यारे भारत देश, जगत में न्यारे भारत देश के लिए एक नई जागरूक पीढी का तरोताजा फार्मूला लिए कॉलेज में आयी हैं और आप हैं कि बेचारी की आशाओं पर घडे भर-भरकर पानी उडेले जा रही है।''[37]

'अग्निपंखी' उपन्यास में व्यग्यात्मक भाषा का प्रयोग हुआ है। जयशंकर को चाचा 'संकखा' कहकर बुलाते हैं तब मॉ को बुरा लगता है। मॉ उसे अच्छे नाम से बुलाने को कहती है। तब बडको व्यंग्य करती है और बहुत दिनों तक जयशंकर को नौकरी नहीं मिलती तब गॉव के लोग उस पर व्यंग्य करते हैं।

''सुनते हो, 'जयशंकर लाल' कह के बुलाया करो। उसकी महतारी को बुरा लगता है। पढा-लिखा के लाट गवंडर(गवर्नर) बनाएगी न बेटे को, हल-जूआ थोडी जोतेगा।''[38]

''तू खा ले कुछ।''[39]

''हूह, मनलायक नौकरी नहीं मिल रही .पता नहीं, कितना सच, कितना झूठ, इम्तहान भी पास किया कि यों ही बेवा माँ और चाचा, ताऊ को उल्लू बना रहा है वरना ऐसा भला हो सकता था कि नौकरी के ही लिए इम्तहान पास किया जाए और नौकरी ही न मिले।''[40]

''भला आयी तो। मैंने समझा था, बरात के दिन उतरेगी।''[41]

यहॉ व्यंग्य करनेवालों की मानसिकता से हम परिचित होते हैं। ऐसे लोगों की हमारे समाज में कमी नहीं है।

आवेशात्मक भाषा -

'दीक्षांत' में आवेशात्मक भाषा का प्रयोग हुआ है। मि शर्मा के साथ जब बरूआ उद्दंडता से पेश आता है तब वे कहते हैं - ''ऐसों-ऐसों की तो कलर खींच, दो-चार हाथ लगाना चाहिए-सरे बाजार....सारी मक्कारी भूल जाए।''[42]

''बकवास बंद करो और दफा हो जाओ यहॉ से।'' आपा खोकर चीखे थे वे, ''मेरे विषय में नबर घटाने-बढाने पर पास फेल करने का अधिकार सिर्फ मेरा है - तुम प्रिंसिपल, वाइस प्रिंसिपल तक जाकर

अपनी सोर्स आजमा सकते हो- इस मुद्दे पर मैं झुकनेवाला नहीं, इतना समझ लो बेकार मेरा समय नष्ट करने से कोई फायदा नहीं।''[43]

मि. शर्मा की मृत्यु के बाद जब कॉलेज के छात्र, अध्यापक नारे लगाते हुए आते हैं तब कुंती कहती है -

''नहीं . SS नहीं SS।'' इन्हें वापस-वापस कर दीजिए।[44]

'अग्निपंखी' में जयशंकर अपनी माँ को शहर की बाते कहते हुए आवेश से कहता है -

''यह सहर है, सहर। गॉव नहीं कि जहॉ हुआ, लोटा लिए बैठ गए। सहर का कायदा रहते-रहते सीखोगी। सीधे चली आ रही हो दिहात से, न कुछ जानो, न बूझो और मेरे दिमाग की दवा बता रही हो। पता नहीं, अभी कितने दिन तुम्हारे साथ सिर खपाना पडेगा।''[45]

जयशंकर शहर में नौकरी ढूँढने जाते समय कहता है -

''भाग नहीं रहा हूँ घर से, समझी। कह देना उनसे भी, थाने-पुलिस के लिए ढिंढोरा न पिटवाए। मैं खुद ही हफ्ते-दो हफ्ते पीछे आऊँगा, या चिठ्ठी दूँगा।''[46]

जयशकर की रहन-सहन को लेकर जब घर में झगडा होता है, तब मॉ कहती है -

''क्या सिहाती रहती है दिन-रात ? ऐसी कौन-सी राजगद्दी मिल गई है से सहर में ?''[47]

मॉ को लेकर घर में झगडा होने पर जयशंकर आवेश से कहता है- जमीन-जायदाद में मेरा भी तो हिस्सा है और .मैं अपने बाप का अकेला हूँ।''[48]

''तुम दोनों मुझे मुँह दिखाने लायक भी रखोगी या नहीं ? उसे फटी लुगरी पहना दरवाजे पर क्यो बैठा रखा है।''[49]

गभीर भाषा -

'दीक्षात' में मि शर्मा को लडकों की उद्दंडता के कारण प्रिंसिपल से डांट सुननी पडती है तब वह गभीरता से डिसूजा से कहता है -

''डिसूजा बता सकते हो इन सब के मूल में मेरा अपराध क्या है. ।''[50]

ग्राम्य भाषा -

'अग्निपंखी' उपन्यास में माँ की बातों से ग्राम्य भाषा का प्रयोग हुआ है -

"मैं जरा दिसा-मैदान से निपट नहा धो लूं।"[51]

"अब मैं जरा ढरकूंगी।"[52]

"कौन जाने पथावे ही। हमारा क्या, गाँव के हुए।"[53]

सूर्यबाला ग्राम्य भाषा का परिचय देने में सफल हुई है और वह पात्रानुकूल भाषा के प्रयोग में सिद्धहस्त है।

तात्पर्य यह कि 'दीक्षांत' और 'अग्निपंखी' उपन्यास में सूर्यबाला ने भाषा के कई रूपों का प्रयोग किया है, जिससे भाषा में सहजता, सुंदरता और स्वाभाविकता आ गई है।

वर्णनात्मक भाषा का प्रयोग अधिक मात्रा में करते हुए लेखिका ने वर्तमान और अतीत का वर्णन किया है। भाषा के विभिन्न रूपों का प्रयोग कर सूर्यबाला उसमें सफल हुई है। आवेशमयी और व्यंग्यात्मक भाषा के प्रयोग द्वारा पात्रों की मानसिकता से परिचित कराया है। आदेशात्मक भाषा द्वारा न्याय-अन्याय, सत्य-असत्य की बात करती है। ग्राम्य भाषा का प्रयोग कर ग्रामीण जीवन की झाँकी भी प्रस्तुत की है।

5.2.1.3 भाषा-सौंदर्य के साधन -

इसमें भाषा के सौंदर्य को बढानेवाली बाते आ जाती हैं, जैसे- विशेषण, रूपक, उपमान, शब्दशक्तियाँ, प्रतीक, बिंब, मुहावरें और कहावतें, सूक्तियाँ, वाक्य-विश्लेषण आदि।

विशेषण -

'अग्निपंखी' उपन्यास में विशेषणों का प्रयोग हुआ है। कनखजूरी बिटिया, लठ्ठमार बोली, तंग कोठरी, नीला परदा, सफेद साडी, कडुवाती चाय, झुरझुरी हवा, मलाईसरीखा कपडा, लकदक पतलून, लच्छेदार बाल, चमचमाते बूट, जहरीली आवाज आदि विशेशण हैं। उचित विशेषणों के प्रयोग भाषा की समृद्धि में सहायक बने हैं।

कहावतें और मुहावरें -

'दीक्षांत' उपन्यास में मुहावरों का प्रयोग हुआ है - खून का घूँट पीना, दर-दर की ठोकरे खाना, दहक उठना, गेहू के साथ धुन का पिसना, लोहे को लोहा काटना आदि मुहावरों का प्रयोग हुआ है।

'अग्निपंखी' उपन्यास में भी मुहावरों का प्रयोग हुआ है। सिर से पांव तक आग लगना, टकटकी बॉधना, टस से मस न होना, रेरी मारना, उखड जाना, पौं फटना, सीधे मुँह बात न करना, डंक माना, कान खडे होना, तिलमिला उठना, लावा फूटना, एहसान जताना, खून-पसीना एक करना, हकबका देखना आदि मुहावरें आए हैं।

मुहावरें भाषा के आभूषण होते हैं सही जगहों पर उपयुक्त मुहावरों का प्रयोग कर लेखिका ने अपनी भाषा को समृद्ध बनाया है।

इस प्रकार 'दीक्षांत' और 'अग्निपंखी' उपन्यास की भाषा रोचक है। भाषा स्वाभाविकता के कारण प्रभावशाली बन गई है। भाषा के सौंदर्य को बढाने के लिए विभिन्न साधनों का प्रयोग कर भाषा को समृद्ध बनाया है।

5 2 2 शैली -

साहित्य की यह विधा आधुनिक युग की आम-जनता की सशक्त वाणी है। आम-जनता के विचारों को व्यक्त करने के लिए उपयुक्त माध्यम है। ''रचनाकार अपनी भावाभिव्यक्ति को विशेष पद्धति से व्यक्त करने का प्रयास करता है, उसे ही शैली कहा जाता है।''[54]

आरंभिक काल में रूढिगत शैली के रूप में ही उपन्यास लिखे जाते थे। तृतीय पुरूष के रूप में वर्णनात्मक शैली ही प्राय उपन्यास के क्षेत्र में सर्वाधिक प्रचलित थी। आधुनिक काल में इसी शैली से अन्य भी शैलियॉ निर्माण हो चुकी हैं।

5 2.2.1 वर्णनात्मक शैली -

उपन्यासकार इस शैली के माध्यम से निर्लिप्त भाव से वर्णन करता चला जाता है। इस शैली के माध्यम से चरित्र-चित्रण की सफलता की आशा भी हम कर सकते हैं। यहाँ उपन्यासकार एक सर्वज्ञ की भाँति

हमारे सम्मुख आ जाता है।

'दीक्षांत' में 'राधिका देवी बिसारिया कॉलेज' के सामने की गुड मंडी और बस अड्डे का वर्णन लेखिका ने किया है -

''फाटक से शुरू होइये तो जमापूँजी दो-चार युक्लिप्टस वैसे ही ट्रकों के तोल जले धुएँ और उडती गर्द से पूरी तरह ढंके खडे हैं। बाकी का पूरा अहाता भी वैसा ही ऊबड-खाबड, तितर-बितर, सामने की चौडी सडक से आलू-प्याज या तिलहन, गुड लादकर मंडी की ओर जाती तेज हार्न बजाती ट्रकें और बरसात के महीनों बाद तक कीचड मिट्ट से लदा-फदा फुटपाथ और उन पर खटमीठे चूरन, कटखीरे, अमरूद और तरबूज की फाको की रेहडीवालों का मिला-जुला शोर शराबा।''[55]

'दीक्षांत' में वर्णनात्मक शैली द्वारा मिसेस सब्बरवाल, चंद्रभानसिंह और मि शर्मा का वर्णन लेखिका ने किया है।

'अग्निपंखी' में वर्णनात्मक शैली द्वारा शहर, गांव का वर्णन इस प्रकार है - ''जाने कितनी मोटर, रिक्शें, टिरामों की रेलमपोल देखोगी, और तो और जयशंकर बतावे कि एक कोठरी तो ऐसी होय कि तुम जाय के खडे होय जाओ तो बटन दबते ही भन्न से ऊपरी मंजिल में पहुँचाय देगी और फिर सारे सहेर हा नजारा लोओ । रात में चमचम रोसनी अइसी कि दस उकमानगंज की बत्तियॉ इकठ्ठी करो, तो भी लज्जा जाय.... समझो हर रोज ही दीवाली ।''[56]

''अपने गांव का घर भी कोई महल-दुमहला या हवेली नही हैं। ऐसा ही कच्चा-पक्का मिला-जुला। कोठरियॉ भी गांव-गवार जैसी ही। पर ओसरे आंगन इतने बडे कि ऐसी कई कोठरियां भी समा जाये। और फिर घर छोटा भी हो, तो चारो तरफ फैले खेत-खलिहान, मेड-मैदान अपने ही होते हैं, जिधर चाहें, उधर टहाल घूम लो।''[57]

इस उपन्यास में चंदा का वर्णन है, रेलगाडी, श्यामकिशोर की पत्नी का वर्णन भी किया गया है। लेखिका इनका वर्णन करने में सफल हो चुकी है।

5 2.2.2 विवरणात्मक या विश्लेषणात्मक शैली -

इस शैली के जरिए उपन्यासकार सिर्फ वे ब्यौरे दे देता है जिनका पाठकों की दृष्टि से अत्यंत महत्त्व होता है। उपन्यासकार तटस्थ रहकर उन बातों का विवरण देता है या विश्लेषण करता चला जाता है, जिससे पाठकों को उन घटनाओं या पात्रों के चरित्र की जानकारी प्राप्त होती है। सूर्यबाला ने 'दीक्षांत' और 'अग्निपंखी' में इसी शैली का कई जगहों पर प्रयोग किया है।

'दीक्षांत' में आधुनिक नारी के रूप में मिसेस सब्बरवाल, पॉलिटिक्स का चंद्रभान सिंह का विश्लेषण किया है -

''मिसेस सब्बरवाल स्वीवलेस चुस्त ब्लाऊज के बाए कंधे पर पीली आरगेंजा का तहाया पल्लू और दाहिने पर मरून स्वेटे बैग झुलाती, गजब के आत्मविश्वास के साथ स्टाफ रूम की ओर बढ आयी।''[58]

''चंद्रभान सिंह का पांच फुट पांच इंच का कद उन्हें खासा छह फुटा लगता है और पूरी शक्सियत बला की रूआबदार।''[59]

इसमें मि. शर्मा, कुंती, लाखन, राजदान आदि का विवरणात्मक वर्णन किया है।

'अग्निपंखी' में विवरणात्मक शैली का प्रयोग चंदा का वर्णन, शादी के वर्णन में हुआ है -

''चंदा को उबटन लगा रही हूँ, चंदा के बाल गांछ रही हूँ। बित्तेभर की चंदा। दो अंगुल-भर बाल नहीं, पर गज-भर लंबे लाल-गुलाबी फीते का फूल बना रहता है।''[60]

''लेकिन शादी में तो आस-पास के चार-पाँच गॉव के लोग न्योते जाएंगे। इज्जत का सवाल है। गेहू-चावल बीनने-पछारने से लेकर, अचार, चटनी, मसाले, दालें सब घरना, सुखाना, कुटना, छॉटना। इतना काम तो सोचकर ही छोटकों की चंदा नजरा गयी होगी।''[61]

''उन्हें जयशंकर याद आ जाता। चिडचिडा, घुन्ना, हरबात पर रूखा, सपाट जबाब देनेवाला त्रिलोकी ठाकुर से लेकर प्यारे तक से कन्नी काटकर अलग-अलग अपनी बनाई नीरस दिनचर्या . बीडी के धूएं के साथ फूंक-फूंककर उडानेवाला खौलती चाय के साथ-साथ घूंट-घूंट उतारनेवाला।''[62]

इसमें गॉव का घर, शादी त्रिलोकी ठाकुर आदि का विवरण दिया गया है। इन शैलियों की यह विशेषता रही हैं कि कहीं भी वर्णन या विश्लेषण का अनावश्यक विस्तार नहीं है।

5 2.2.3 आंचलिक शैली -

लेखक द्वारा उपन्यास में चित्रित घटनाओं से संबद्ध प्रदेश-विशेष का चित्रण आंचलिक शैली में होता है।

'दीक्षांत' उपन्यास में आंचल का वर्णन इतना अधिक नहीं है। सिर्फ कॉलेज का वर्णन आया है।

'अग्निपंखी' में आंचल का इतना वर्णन नहीं है। शहर का वर्णन ही प्रदेश-विशेष के रूप में आ चुका है। गाँव के वर्णन में खेत, मकान का वर्णन आया है। गाँव के रहन-सहन विचार, संस्कृति का चित्रण माँ के परिचय से मिलता है। गॉव की बोली का प्रयोग मॉ, बडको, छोटको आदि के माध्यम से हुआ है, जैसे- "तेल, फुलेले रहने दो। चौका बटा के ताला उठा कुंजी कर दे।"[63]

इस प्रकार सूर्यबाला ने 'दीक्षांत' और 'अग्निपंखी' उपन्यासों में आंचलिक शैली का प्रयोग किया है।

5 2 2.4 मनोविश्लेषणात्मक शैली -

आधुनिक उपन्यासों में यह एक नई शैली निर्माण हो गई है। भावना और अंत संघर्ष को उभारने के लिए अधिकतर इस शैली का प्रयोग आलोच्य उपन्यास में सूर्यबाला ने किया है।

'दीक्षांत' में मि शर्मा नौकरी की बात प्रिंसिपल के सामने कहने की आंतरिक भावना व्यक्त हुई है, जैसे-

"सुबह से एक ही बात सैंकडों बार दिमाग में घोट चुके होंगे- कैसे कहूँगा, क्या कहूँगा ? कहीं अगल-बगल ज्यांदा लोग बैठे न हो क्योंकि इस तरह बैठे लोग दिखाते तो यही है कि उन्हें किसी और की बातों से कोई सरोकार नहीं, पर असल में ऐसी बातें लोग चार कानों से सुन रहे होते हैं।"[64]

मि शर्मा की बेचैनी और घुटन भी व्यक्त हुई है, जैसे-

"नहीं, अब और नहीं सहना है यह दैत्य पीडा और गिडगिडाहट भरी जिदगी अपनी आत्मा का कतरे-कतरे रिसता हुआ रक्त अब और नहीं बहने देना है . नही खाएंगे, अपनी ही आत्मा को बेचकर पेट भरने का रोजगार नहीं कर पाएंगे और ।"[65]

"क्या वे कहेंगे की लडकों ने उन्हें इस तरह अपमानित किया ? क्या कहेंगे कि उनका आत्मविश्वास चुक रहा है ? क्या कहेंगे कि उपेक्षाओं, उपहास और तमाम-तमाम संत्रास के बोझ निरंतर घुस्ते हुए चुकते जा रहे हैं वे और इस घुटन से मुक्ति पाने की आशा में आए हैं उनके यानी चंद्रभान सिंह के पास।"[66]

'अग्निपंखी' उपन्यास में भी मनोविश्लेषणात्मक शैली का प्रयोग हुआ है। मॉ का मन विक्षिप्त बन गया है। तब वह कहती है- "कुछ नहीं, ऐसे ही पूछती थी। हनुमान चालीसा लाने को कह गये थे। कहते थे, हनुमान चालीसा और सुंदरकाड का पाठ किया करो ले आए तब बन करू।"[67]

मॉ का मनोव्यापार इतना बढ गया है कि वह पागल जैसी बन गई है। "न कहना, कभी न कहना उस घर में अपने कुलदेवता का वास है। पुरखों की थाती है। ऐसी बात कहते-सुनते भी पाप लगता है।"68

"हा, तिरलोकी ठाकुर . । हनुमानाष्टक का पाठ करो, तिरलोकी मइया। सुंदरकांड खरीदकर लाये क्या ? ठक कहते हो बडे पाप कटने है। जयशंकर के बाबू आये . कहां अभी खलिहात से ? चलो, देर भई रे मइया के थान-चलना है। देवी मइया, धरती मइया . घट.. .घटवासिनी-सिंदूर-अगरबत्ती, रोरी, नारा, धूप-दीप, नैवेद्य आम की ताजी कोपलें . चढाओ रे चढाओ।"[69]

सूर्यबाला मनोविश्लेषणात्मक शैली में मन की विक्षिप्तता, बेचैनी और आंतरिक भावना का परिचय देने में सफल हुई है।

5 2.2.5 काव्यात्मक शैली -

उपन्यास को प्रभावात्मक बनाने के लिए काव्यात्मक शैली का प्रयोग किया जाता है। इससे उपन्यास में सरसता, रोचकता निर्माण होती है। 'दीक्षांत' में सूर्यबाला ने इस शैली का प्रयोग किया है। जिससे सहृदय व्यक्ति थोड़ा और भावुक बन जाता है।

डिप्टी साहब के सामने विद्याभूषण गाधीजी पर कविता सुनाता है तब काव्यमय वातावरण निर्माण होता है।

"देश के सपूत का महाप्रयाण है"[70]

''विचार लो कि मर्त्य हो।

न मृत्यु से डरो कभी।

वही मनुष्य है कि जो मनुष्य के लिए मरे।''[71]

विद्याभूषण को बचपन की यादें आती तब वातावरण काव्यमय बनता है -

''हिमाद्रि तुंग श्रृंग से प्रबुद्ध शुद्ध भारती,

स्वयं प्रभा, समज्ज्वला, स्वतंत्रता पुकारती।''[72]

इस प्रकार विद्याभूषण शर्मा के अंतिम दिनों में भी काव्यमय वातावरण बन गया है।

इस तरह हम देखते हैं कि, सूर्यबाला के 'दीक्षांत' और 'अग्निपंखी' उपन्यासों की शैली देखने के बाद हम इस निष्कर्ष तक पहुँचे हैं कि इन उपन्यासों में सभी शैलियों का प्रयोग हुआ है। इन उपन्यासों में अधिक मात्रा में वर्णनशैली और विश्लेषण शैली का प्रयोग हुआ है। इन शैलियों द्वारा पात्रों का आत्मविश्लेषण सफलता से किया है। इसलिए ये उपन्यास शिल्पगत है।

भाषा के संदर्भ में यही मंतव्य है कि, 'दीक्षांत' की भाषाशैली में कई प्रकार के शब्द, भाषा के कई रूप और शैलियों के विविध प्रकारों का सफलतापूर्वक प्रयोग हुआ है।

'अग्निपंखी' उपन्यास में ग्रामीण बोली के साथ-साथ, कई प्रकार के शब्द भाषा के रूप और भाषा को सौंदर्य प्रदान करनेवाले कई साधनों का प्रयोग किया है।

सूर्यबाला ने 'दीक्षांत' और 'अग्निपंखी' उपन्यास की भाषा सहज, सुंदर बनाने के लिए शब्दों के कई रूपों का प्रयोग किया है और उसमें सफलता भी पाई है। शैलियों के विविध प्रयोगों द्वारा उपन्यास के कथानक को प्रभावशाली बनाया है।

निष्कर्ष -

सूर्यबाला के संवाद स्वाभाविक, उपयुक्त, पात्रानुकूल हैं। संवादों के द्वारा कथानक को गतिशील बनाते हुए लेखिका अपने उद्देश्य में सफल हुई है। संवादों से ही दृश्यों में सजीवता आई है। मनोवैज्ञानिक कथोपकथन से उपन्यासों में कलात्मकता आ गई है। उसी के साथ-साथ पात्रों के अंतर्मन को

खोलकर रख दिया है। कथोपकथन सजीव, रोचक एवं पात्रानुकूल है। सूर्यबाला के उपन्यास संवादों से प्रभावशाली बने हैं।

सूर्यबाला के उपन्यासों की भाषा सरल, सरस और प्रवाहशील है। लेखिका ने भाषा को सुंदर, सहज बनाने के लिए शब्दों के कई रूपों का प्रयोग किया है। इसी कारण भाषा में स्वाभाविकता आ गई है। वर्णनात्मक भाषा का प्रयोग अधिक मात्रा में लेखिका ने किया है। साथ ही व्यंग्यात्मक भाषा से आज के समाज के लोगों का परिचय दिया है। आवेशमयी भाषा द्वारा पात्रो की मानसिकता चित्रित करने मे सूर्यबाला सफल हो चुकी है। ग्रामीण जीवन की झॉकी भी ग्राम्य भाषा द्वारा सुंदर रूप से चित्रित की है। इस प्रकार सूर्यबाला 'दीक्षात' और 'अग्निपंखी' उपन्यासों की भाषा में सफल हो चुकी है।

'दीक्षांत' और 'अग्निपंखी' उपन्यासों में महत्त्वपूर्ण शैलियों का अधिक प्रयोग हुआ है। वर्णनशैली, विश्लेषण, आंचलिक, मनोविश्लेषणात्मक, काव्यात्मक शैलियों का प्रयोग करके उपन्यासों का आकर्षण और कथ्य रोचक बना है। विविध शैलियों का प्रयोग करते हुए इन उपन्यासों में अधिक मात्रा मे वर्णन शैली का प्रयोग करके पात्रों का आत्मविश्लेषण करने में सफल हो चुकी है।

इस तरह संवाद और भाषाशैली की दृष्टि से 'दीक्षांत' और 'अग्निपंखी' - दोनों उप्न्यास पूर्णतया सफल हैं।

संदर्भ सूची

1 डॉ प्रतापनारायण टंडन, हिंदी उपन्यास कला, पृ 219

2 वही, पृ 223

3 वही, पृ 223

4 सूर्यबाला, दीक्षांत, पृ 23

5 वही, अग्निपंखी, पृ 20-21

6 वही, दीक्षांत, पृ 39

7 वही, अग्निपंखी, पृ 16

8 वही, दीक्षांत, पृ 7

9 वही, अग्निपंखी, पृ 48

10 वही, दीक्षांत, पृ 29

11. वही, पृ 69

12 वही, अग्निपंखी, पृ 42

13 वही, दीक्षांत, पृ 12-13

14 वही, अग्निपंखी, पृ 10

15 वही, दीक्षांत, पृ 50

16 वही, पृ 98

17 वही, अग्निपंखी, पृ 62

18 वही, दीक्षांत, पृ 50

19 वही, पृ 64

20 वही, अग्निपंखी, पृ 35

21 वही, पृ 14

22 सूर्यबाला, दीक्षांत, पृ. 40

23 वही, पृ. 128

24 डॉ सुरेश सिन्हा, हिंदी उपन्यास, पृ. 391-392

25 डॉ प्रतापनारायण टंडन, हिंदी उपन्यास कला, पृ. 235

26 सूर्यबाला, दीक्षांत, पृ 19

27 वही, पृ 75

28 वही, पृ. 89

29 वही, अग्निपंखी, पृ 11

30 वही, पृ. 12

31 वही, पृ 45

32 वही, दीक्षांत, पृ 40

33 वही, पृ 45

34 वही, पृ 54

35 वही, अग्निपंखी, 30

36 सूर्यबाला, अग्निपंखी, पृ. 13

37 वही, दीक्षांत, पृ. 40

38 वही, अग्निपंखी, पृ 10

39 वही, पृ 14

40 वही, पृ. 20-21

41 वही, पृ 33

42 वही, दीक्षांत, 54

43 वही, पृ 64

44 वही, पृ 121

45 सूर्यबाला, अग्निपंखी, पृ 15

46 वही, पृ 22

47 वही, पृ 42

48 वही, पृ 54

49 वही, पृ 58

50 वही, दीक्षांत, 68

51 वही, अग्निपंखी, 14

52 वही, पृ 16

53 वही, पृ 35

54 डॉ पांडुरंग पाटील, देवश ठाकुर और उनका उपन्यास साहित्य, पृ. 203

55 सूर्यबाला, दीक्षांत, पृ 4

56 वही, अग्निपंखी, पृ 1

57 वही, पृ. 18

58 वही, दीक्षांत, पृ 19

59 वही, पृ 75

60 वही, अग्निपंखी, पृ 11

61 वही, पृ 31

62 वही, पृ 38

63 वही, पृ. 36

64 वही, दीक्षांत, 50

65 वही, पृ 66

66 वही, पृ 77

67 वही, अग्निपंखी, पृ 46

68 सूर्यबाला, अग्निपंखी, पृ 59

69 वही, पृ. 62

70 वही, दीक्षांत, पृ 13

71 वही, पृ. 17-18

72 वही, पृ 18